सीजन का होमवर्क

2013-2014

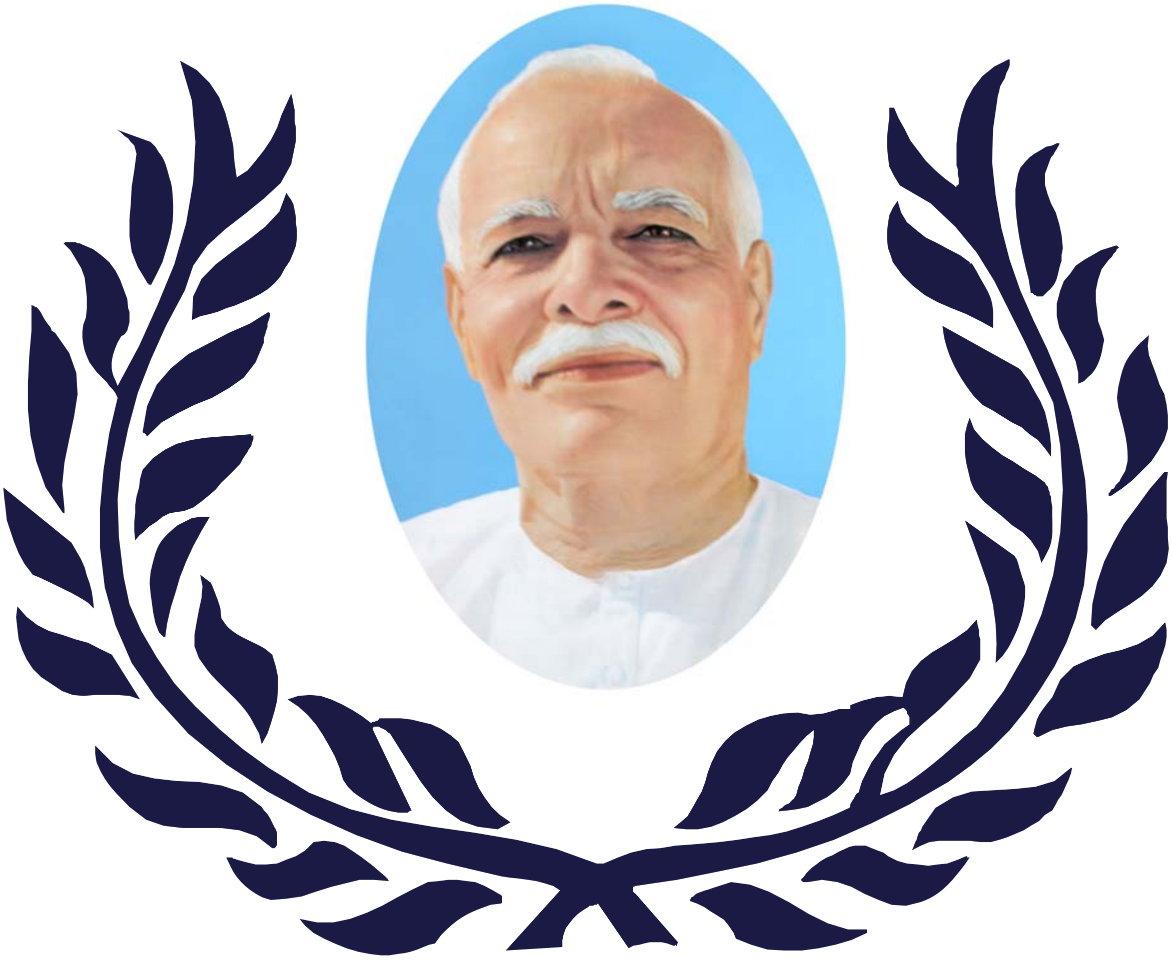

सीजन का होमवर्क

2013-2014

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

एवं

राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान

पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'सीजन का होमवर्क २०१३-२०१४'**एक है।

प्रस्तावना

बापदादाने इस सीजन 2013-2014 में समय की समीपता के ईशारे प्रमाण बहोत छोटी वाणीयां चलाई है। फिर भी फाईनल पेपर के पहले हमें पास वीथ ओनर बनाने के लिए पढाई के सार रुप में विशेष बातों पर तीव्र पुरुषार्थी बनने के लिए ईशारे दिये है। जो विशेष तीव्र पुरुषार्थ की टोपीक्स का, सीजन के सार रुप में होमवर्क का संग्रह इस पुस्तक में है। जीन्हें बार बार पढने से हम सभी तीव्र पुरुषार्थी बन बापदादा के दिल पसंद बनेंगे।

टोपीक्स

1	मन्सा सेवा	11
2	समय के गंभीर ईशारे	13
3	खुशी – वाह वाह	21
4	एक बल – एक भरोसा	25
5	संगठन – निर्विघ्न	31
6	अमृतवेला	37
7	व्यर्थ संकल्प – ड्रामा	40

ओम् शान्ति

होमवर्क

(सार रुपमें)

- ❖ अभी आप सभी के मन्सा सेवा की आवश्यकता है। मन्सा सेवा हर एक कर सकता है। चाहे बीमार हो, चाहे कोई भी कारण हो लेकिन मन्सा सेवा से जो वायुमण्डल बहुत गंदा हो रहा है, चारों ओर गंद ही गंद है, उसको मिटाने के लिए वाचा सेवा तो करते हो लेकिन अभी मन्सा सेवा से आत्माओं की मन्सा को चेंज करो।
- ❖ **मन्सा सेवा के लिए सहज विधि क्या हो? खुद को पहेले मैं शक्तिशाली आत्मा हुं, मन में यह अनुभव करों। बापदादा से मन का कनेक्शन जोडो और बापदादा से मन के कनेक्शन से सर्व शक्तियां अपने मन में धारण करो, फिर वायब्रेशन फैलाओ।** (25.08.2013 - **दादीजी**)
- ❖ **अभी मन्सा शक्ति द्वारा वायब्रेशन चेंज करना, वातावरण चेंज करना उसकी आवश्यकता है । यह सुनने सुनाने से नहीं होगा लेकिन अपने मन की शुभ कामना, मनुष्यों की वृत्ति को, दृष्टि को, कृति को परिवर्तन कर सकती है ।** (24.10.2013)

- ❖ **सदा खुश है और सदा खुश रहेंगे । कोई भी बात आये, बात बाप को दे दो और आप मुस्कुराते रहो ।** (15.11.2013)
- ❖ **सदा खुशनुमा रहनेवाले खुश किस्मत बच्चों को बहुत बहुत बहुत बहुत याद प्यार । सदा खुश रहना और खुब खुशी बांटना ।** (15.12.2013)
- ❖ **बापदादा सभी बच्चों के चेहरे में सदा बेफिकर बादशाह की झलक देखने चाहते है ।** (31.12.2013)

- ❖ **लेकिन आज जो भी जिसमें कमजोरी हो, अगर जरा सा स्वप्न मात्र**

भी हो तो आज के दिन द्रढ संकल्प से बाप को दे दो । सुबह अमृतवेले, अमृतवेला करने के बाद संकल्प को चेक करना और दिल से द्रढ संकल्प करना तो बापदादा की एकस्ट्रा मदद मिलेगी । (31.12.2013)

❖ मेरा बाबा, जितना बाप में मेरापन लायेंगे, मेरा बाबा, मेरा बाबा उतना सहज याद होती जायेगी क्योंकि मेरी बात कभी भुलती नहीं है । तो बाप को मेरा बनाओं और मेरा भूले नहीं । (31.12.2013)

❖ सदा वाह वाह । बाप सदा वाह वाह लगता है ना तब तो याद करते हो ना । तो बाप वाह वाह तो बच्चे भी वाह वाह । सुबह को उठके याद करना मैं कौनसा बच्चा हूं ? वाह वाह बच्चा हूं । सुबह को उठते ही यह वाह वाह शब्द याद करना । बाप देखे वाह वाह । अगर कभी मूड ओफ हो ना, तो वाह वाह शब्द याद रखना । (31.12.2013)

❖ आज बापदादाने गुडनाइट की । अच्छा गुडनाइट । आप जाके खाके सोना, बाकी गुडनाइट याद रखना । (31.12.2013)

❖ ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है, स्मृति स्वरुप बापदादा के बनों । अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं । दोनों को याद करो । दोनों की पालना आगे से आगे बढा रही है । (18.01.2014)

❖ छोटी छोटी बाते किस समय भी आ सकती है । इसलिये अपने को अलर्ट रखना, अपना फर्ज है । कोई कितना भी कहें लेकिन स्वयं, स्वयं को अलर्ट करना है । (31.01.2014)

❖ आज बापदादा सेवा और स्वयं दोनो को एवररेडी करने के लिए ईशारा दे रहे है। संतुष्टता का वायुमंडल हर स्थान पर होना चाहिए। (31.01.2014)

❖ अगर कोई विध्न है या कोई हलचल है तो अपने दादियों को या

जिसमें भी आपका फेथ हो, बडी दादी या दादियों में उनको सुना देना, रखना नहीं, अंदर कोई न कोई इलाज ले लेना क्योंकि होना है, तो अचानक होगा। उस समय पुरुषार्थ कर नहीं सकेंगे। अभी चेक करो, कुछ अचानक हो जाये, हलचल हो जाये तो इतनी शक्ति है जो स्वयं को बचाये। (31.01.2014)

- ❖ कोई भी गलती रखना नहीं, अगर हो भी गई तो बापदादा से दिल में पश्चाताप करके उसको खतम करना। जमा नहीं करो। बापदादा हर एक का खाता देखे तो कैसे खाता हो ? ओ.के. वेरी गुड। (31.01.2014)
- ❖ हर एक अपने सेवा स्थान को निर्विध्न बनाकर सभी की दुआयें ले । हर एक सेवाकेन्द्र या हर एक जहां भी है, घर में है, चाहे सेन्टर पर है, यह द्रढ संकल्प करे और करके दिखावे कि मैं निर्विध्न हुं और साथियों को भी निर्विध्न बनाने कि सेवा करुंगा। (14.02.2014)
- ❖ संकल्प में भी निर्विध्न, व्यर्थ संकल्प भी नहीं, स्टोप कहा स्टोप। अभी संकल्प के उपर अटेन्शन की आवश्यकता है। बाप को साथ रखेंगे ना, तो बाप का साथ होने से ओटोमेटिकली व्यर्थ समाप्त हो जायेंगे। तो आज के दिन शिवजयंती के उपलक्ष्य में व्यर्थ के उपर अटेन्शन देने का होमवर्क बापदादा दे रहे है। (27.02.2014)
- ❖ तो आज होली अर्थात बीती सो बीती। होली अर्थात बीती। तो जो भी कुछ किया उसको आज बीती सो बीती कर आगे के लिये सफलता मेरा जन्म सिध्ध अधिकार है। अमृतवेले रोज इस वरदान को स्मृति में रख सफलता स्वरुप बनना। (15.03.2014)
- ❖ एक दो को देख उनकी विशेषता को देखो, दुसरी बातों को नही देखो। एक दो की कमजोरी की बातें सुनते भी जैसे नही सुनो। खुद

को भी आगे बढाओ और साथियों को भी आगे बढाते चलो। तीव्र पुरुषार्थ की लहर सदा अपने में लाते हुए औरो को भी तीव्र पुरुषार्थी की लहर में लाओ। उमंग उत्साह में लाओ, सहयोगी बनो । (30.03.2014)

मन्सा सेवा

25-08-13 (दादीजी)

- ❖ अभी आप सभी के मन्सा सेवा की आवश्यकता है। मन्सा सेवा हर एक कर सकता है। चाहे बीमार हो, चाहे कोई भी कारण हो लेकिन मन्सा सेवा से जो वायुमण्डल बहुत गंदा हो रहा है, चारों ओर गंद ही गंद है, उसको मिटाने के लिए वाचा सेवा तो करते हो लेकिन अभी मन्सा सेवा से आत्माओं की मन्सा को चेंज करो। भाषण सुनते हैं, उसका भी प्रभाव पड़ता है लेकिन स्वयं मन्सा सेवा द्वारा परिवर्तन हो जाये। जो इतनी गंदगी अति में जा रही है क्योंकि अति में तो इसीलिए जा रही है क्योंकि अति के बाद अन्त तो होना ही है लेकिन आप सिर्फ भाषण से नहीं मन्सा सेवा से भी मन्सा को परिवर्तन करो क्योंकि अभी मन्सा सभी की गंदगी की होती जा रही है।
- ❖ आप लोगों की खुद की मन्सा भले विपरीत नहीं है, लेकिन फालतू है। फालतू टाइम, फालतू संकल्प, फालतू बोल यह चलता है, वह फालतू अभी खत्म होना चाहिए। आपका पहले खत्म होगा तो वायब्रेशन फैलेगा।
- ❖ चाहे हमारा जन्म हो गया है लेकिन हम संगम के समय से और संगम के शरीर से वहाँ इमर्ज होते हैं इसीलिए हम लोगों को बाबा मन्सा सेवा का वायब्रेशन फैलाओ, देश-विदेश का चक्र लगवाते हैं। कभी कहाँ का, कभी कहाँ का, मन्सा सेवा का अभ्यास कराके, विश्व की सेवा कराते हैं। कभी इन्डिया, कभी विदेश दोनों तरफ मन्सा सेवा का अभ्यास कराते हैं और उन्हों की बुद्धियों को, बुद्धिवान की बुद्धि है बाबा। तो बुद्धिवान बाबा उनकी बुद्धियों को मन्सा द्वारा टच करते हैं। आप कौन है!
- ❖ अभी मन के व्यर्थ संकल्प जो हैं, उसको खत्म करने का अटेन्शन चाहिए क्योंकि देखा यह है कि खराब संकल्प इतना नहीं चलते हैं लेकिन व्यर्थ

काफी चलते हैं। जो काम नहीं होगा ना उसके भी चलेंगे। खराब नहीं होंगे लेकिन हैं व्यर्थ इसीलिए मन्सा सेवा से पहले व्यर्थ को खत्म करो।

❖ यह अति में जाना, यह अति ही अन्त लायेगा। सब तंग हो जायेंगे, क्या हो रहा है, क्या हो रहा है...। हल दिखाई नहीं देगा फिर सोचेंगे कहाँ जायें। कोई सहज साधन चाहिए। सहज साधन ढूढंते आप लोगों के पास आयेंगे और आप लोग मन्सा सेवा का कंगन बांधो। राखी बांधी है ना। तो यह राखी जो है वह मन्सा सेवा का बंधन है।

❖ हर एक बड़े देश जो हैं, वहाँ चक्र लगाके मन्सा सेवा के कोर्स कराके उन्हों में आदत डालके आओ। आप जाओ या कोई भी जाये, लेकिन मन्सा सेवा क्या है, उस पर अटेन्शन दिलाओ। अपने-अपने क्लासेज़ में भी मन्सा सेवा का अभ्यास कराओ। व्यर्थ संकल्प अभी बहुत बढ़ गये हैं ।

❖ और दादी क्या चाहती है? (मन्सा सेवा करो) क्योंकि मन्सा सभी की बहुत खराब हो रही है ना। तो मन्सा सेवा करने से आपकी मन्सा पावरफुल का वायब्रेशन उन्हों की मन्सा में भी जायेगा। हमारा राज्य स्थापन होना है ना! तो हमारे राज्य में तो मन्सा बहुत पावरफुल है। **तो क्या करेंगे? दादी ने कहा मन्सा सेवा। मन्सा सेवा के ऊपर अटेन्शन दो और यह दादी (जानकी) कहती है, एकता के ऊपर अटेन्शन दो।**

24-10-13

❖ **दुनिया के वायुमण्डल प्रमाण अभी बच्चों को मैजारिटी पावरफुल सकाश से वायुमण्डल को परिवर्तन करने की मन्सा शक्ति की इस समय आवश्यकता है । मन्सा शक्ति को और पावरफुल कर मन्सा शक्ति द्वारा आजकल के प्रभाव को परिवर्तन करने पर और ज्यादा अटेन्शन देना आवश्यक है । आजकल के हिसाब से सुनने सुनाने**

की शक्ति के बजाए वृत्ति द्वारा वृत्तियां बदलने की आवश्यकता है । बापदादाने देखा वृत्तियां बदलने की शक्ति को और ज्यादा कार्य में लगाना है ।

❖ बापदादा सर्विस को देख दोनों तरफ खुश है लेकिन अभी के वातावरण प्रमाण मन्सा शक्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की आवश्यकता है ।

❖ अभी मन्सा शक्ति द्वारा वायब्रेशन चेंज करना, वातावरण चेंज करना उसकी आवश्यकता है । यह सुनने सुनाने से नहीं होगा लेकिन अपने मन की शुभ कामना, मनुष्यों की वृत्ति को, दृष्टि को, कृति को परिवर्तन कर सकती है ।

❖ आज आवश्यकता है मन के शक्ति द्वारा परिवर्तन करने की । मन की वृत्तियों को परिवर्तन करने की । अभी चारों ओर जैसे भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार की बातें चल रही हैं अभी इस वातावरण को मन की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर सबके मन में परमात्म याद का उमंग-उत्साह पैदा करो ।

समय के गंभीर इशारे

25-08-13 (दादीजी)

❖ जो इतनी गंदगी अति में जा रही है क्योंकि अति में तो इसीलिए जा रही है क्योंकि अति के बाद अन्त तो होना ही है ।

❖ मंहगाई तो बढनी ही है, जब मंहगाई बढनी है तो उसका ध्यान रखना आवश्यक है ।

❖ दुनिया में अभी बुराईयां बढती जा रही हैं, ऐसे टाइम में आप लोगों

को खुशी में रहने की कोई न कोई बातें निकालनी चाहिए ।

- ❖ यह अति में जाना, यह अति ही अन्त लायेगा। सब तंग हो जायेंगे, क्या हो रहा है, क्या हो रहा है... । हल दिखाई नहीं देगा फिर सोचेंगे कहां जाये । कोई सहज साधन चाहिए । सहज साधन ढूंढते आप लोगों के पास आयेंगे और आप लोग मन्सा सेवा का कंगन बांधो ।
- ❖ हमारा राज्य स्थापन होना है ना ! तो हमारे राज्य में तो मन्सा बहुत पावरफुल है ।
- ❖ कभी बाबा कहते है, भ्रष्टाचार के उपर अटेन्शन दो, कभी बाबा कहता है यह बिलकुल अशांति फैलती रहती है, उसके उपर कर्मेन्द्रियों के विजय के उपर अटेन्शन दो । कभी क्या कहता, कभी क्या कहता । तो हम उसमें बिजी रहते हैं । 12-14 का ग्रुप है वह सभी इकट्ठे होते हैं और बाबा जो होमवर्क देते हैं, वह हम करते हैं ।

24-10-13

- ❖ समय अपने नजारे दिखा रहा है ।
- ❖ अभी हमारा राज्य आया कि आया ।
- ❖ बापदादा दृष्टि देते वापस चले गये, फिर से आवाहन किया गया । आंख मिचौली हो गई ।
- ❖ दिपावली निमित्त बापदादा ने सबको बधाई दी :- विश्व के चारों ओर के मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडनाईट ।
- ❖ अपने राज्य में जा के वहां भी दीपावली मनायेंगे । अपना राज्य याद है ना । आया कि आया ।
- ❖ (यहां की दीपावली और वहां की दीपावली में अन्तर क्या होगा) वहां की सजावट ही न्यारी और प्यारी होगी । सजावट और प्यार,

दिल का प्यार। ऐसे तो रुसा हुआ भी दीपक जगा देता है लेकिन वहां सब खुशी-खुशी से दीपक जगाते, मौज मनाते, मौज ही राज्य है। यहां तो मजबूरी से भी जगाते हैं।

28-11-13 (संदेश)

- ❖ बाबा की तरफ से विशेष इशारा दिया है कि वर्तमान समय के चारों ओर के सरकमटन्सीस के अनुसार इस समय विशेष योगबल की आवश्यकता है।
- ❖ समय की रफतार और संसार के वातावरण को देखते हुए इस समय चारों ओर योग के शक्तिशाली प्रकंपन फैलाने की आवश्यकता है।
- ❖ आपके सच्चे ईश्वरीय प्यार से सारा जग रुहानीयत से जगमगायेगा और अति शिघ्र सतयुगी राज्यभाग्य का अधिकार आप सभी बच्चे अवश्य प्राप्त करेंगे।

04-12-13 (संदेश)

- ❖ भविष्य राजधानी के जन्मों मे भी समीप आने का आधार यह परिवार का प्यार है।
- ❖ अब तो अपनी राजधानी आई की आई। उस राजधानी में नजदीक से नजदीक वही आयेगा जो अभी बाबा ने कहां और बच्चों ने किया। इसका आधार है मुरली, प्रैक्टिकल अवस्था।

31-12-13

- ❖ बापदादा अभी आगे चल करके जो समय आनेवाला है, उस समय को देख हर एक संकल्प में हर रोज द्रढता चाहिये।

- ❖ तो यह समय याद करना। जैसे अभी दिल खुश है इस दिलखुश समय को दोहराते रहो।
- ❖ अमृतवेले उठके सदा याद करना, मैं कौन ? वाह वाह बच्चे। कोई भी बात हो ना, वह वाह वाह में समा देना। बात नहीं रखना। बाप और आप बस। अच्छा <u>गुडनाइट</u>।
- ❖ आज बापदादाने <u>गुडनाइट</u> की। आप आपस में <u>गुडनाइट</u> करके सोना। सभी चारों तरफ के बच्चों को बापदादा <u>गुडनाइट</u> कर रहे हैं।
- ❖ अच्छा <u>गुडनाइट</u>। आप जाके खाके सोना, बाकी <u>गुडनाइट</u> याद रखना।

18-01-14

- ❖ हमारी विजय पाने की मौसम है, संगमयुग की विशेषता है। तो समय की विशेषता को युज करते चलो। वरदान है संगमयुग को, बापदादा को फोलो करने का।

31-01-14

- ❖ बापदादा अभी इस समय यही चाहते है कि और भी आत्माओं को यह अनुभव कराओं "मेरा बाबा" और वर्से का अधिकारी बनाओं। आज संसार में दु:ख अशांति या अल्पकाल का सुख फैला हुआ है।
- ❖ आप का विशेष कार्य यही है कि किसी भी प्रकार से कोई एरिया एसी नही रह जाये जो उल्हना दे हमें परिचय ही नही मिला। हमारा बाबा आया और हमको पता नही पडा। यह जिम्मेवारी आप निमित्त

बने हुए बच्चों की है। पता देना आपका कर्तव्य है, जाने नही जाने, वह जाने। तो हर एक अपनी एरिया के आसपास चेक करो कोई भी एरिया संदेश के बिना रह नही जाये। भाग्य हर एक का खुद है लेकिन संदेश देना आप भाग्यवान आत्माओं का कर्तव्य है।

❖ उन आत्माओं को सदा के सुख शांति का थोडा सा भी अनुभव जरुर कराओं । क्योंकि इस समय ही अनुभव करा सकते है । इस समय को वरदान है आत्माओं को परमात्मा से मिलाने का । सारे कल्प में आत्मा परमात्मा का मिलन, परिचय, संबंध, वर्सा इस समय ही प्राप्त होता है । सो अब हर एक बच्चों को जो अधिकारी है उन्हों को सदा उन आत्माओं के उपर तरस आना चाहिये कि कोई भी आत्मायें चाहे देश, चाहे विदेशी वन्चित रह नहीं जाये । क्योंकि समय अचानक आना है, बता के नहीं आयेगा । अपना चारों और संदेश देने का कर्तव्य अवश्य देखो ।

❖ कोई भी हालत अचानक किसी समय भी आ सकती है । अपना फर्ज पुरा करो ।

❖ अचानक कुछ भी खिटखिट शुरु हो सकती है ।

❖ अचानक कुछ भी हो सकता है । बापदादा यहीं कहते है कि समय अचानक आना है इसलिये कर लेंगे, हो जायेगा, यह कोई कोई का संस्कार होता है, तो रह नहीं जाये । क्योंकि समय पर कोई भरोसा नहीं, छोटी छोटी बातें तो अचानक हो ही जाती है ।

❖ तो आज बापदादा सेवा का इशारा दे रहा है, सेवा के साथ और क्या इशारा है ? स्वयं को सम्पन्न बनाने का । अैसे नहीं की सेवामें इतने बिजी हो जाओं तो स्वयं को देखने का समय नहीं मिले । स्वयं को भी देखो और समय को भी देखो । क्योंकि बापदादा

जानते है कि छोटी छोटी बातें किस समय भी आ सकती है । इसलिये अपने को एलर्ट रखना, अपना फर्ज है । कोई कितना भी कहें लेकिन स्वयं, स्वयं को एलर्ट करना है ।

❖ होना है छोटा छोटा हो या बडा हो लेकिन उसके लिये स्वयं को पावरफुल जरुर बनाना है । आज बापदादा इसी पर ईशारा दे रहे है कि अचानक के लिये तैयार रहो । फिर ऐसे नहीं कहना यह तो पता ही नहीं था, होना है, होगा अचानक । आप सबके मनसे हलका हो जायेगा तभी होगा । इसलिये बापदादा इशारा दे रहे है कि अपने आपको चेक करो । तो जो बाप चाहता है मन्सा, वाचा, कर्मणा, संबंध सम्पर्क इन सब बातों मे ऐसी अवस्था हो जो कुछ भी अचानक हो तो सामना कर सकेंगे ? इन्टरनल पावर । आत्मा सदा अटेन्शन में रहे, सदा तीव्र पुरुषार्थी रहे । स्व परिवर्तन और चारों ओर भी परिवर्तन में सहयोगी बनने में, दोनों बात में चेक करना ।

❖ अगर कोई विध्न है या कोई हलचल है तो अपने दादीयों को या जिसमें भी आपका फेथ हो, बडी दादी या दादीयों में उनको सुना देना, रखना नहीं अंदर कोई न कोई इलाज ले लेना क्योंकि होना है तो अचानक होगा । उस समय पुरुषार्थ कर नहीं सकेंगे । अभी चेक करो, कुछ अचानक हो जाये, हलचल हो जाये तो इतनी शक्ति है जो स्वयं को बचाये, वायुमण्डल में यह प्रभाव डाले, औरो के भी मददगार बनें । यह चेक करना । समजा न सभी ने । समजा ।

❖ जो अपने उपर अटेन्शन दे रहे हो । धोखा नहीं खाना, अटेन्शन दो, दे रहे हो और देते रहना । कोई भी मदद चाहिये तो निमित्त बने हुये द्वारा ले सकते है । अैसे नहीं कोई कहे किससे लेवे, निमित्त का पता है, दादियां है ना । दादे है दादियां भी है । कोई भी गलती

रखना नहीं, अगर हो भी गयी तो बापदादा से दिल में पश्चाताप करके उसको खतम करना । जमा नहीं करो । बापदादा हर एक का खाता देखे तो कैसे खाते हो ? ओ.के. वेरी गुड ।

14-2-14

❖ लक्ष्य रखो जैसे अपने को निर्विध्न बनाया है, संकल्प में सफलता है वैसे साथियों को, वायुमण्डल को भी बनायेंगे तब तो अपना राज्य आयेगा ना ! तो अभी आज के दिन बापदादा यही काम देते है कि खुद तो बने है, बापदादा खुश है लेकिन साथियों को भी निर्विध्न बनाये क्योंकि अपना राज्य स्थापन करना है ना तो राज्य में तो सभी होंगे ना !

❖ अपना राज्य तो लाना है ना । तो राज्य में साथी को लाना तो है ना, उसको छोड देंगे क्या ? एक दो को साथ दे के भी लक्ष्य रखेंगे तो हिम्मत आपकी मदद बाप की है ।

❖ बनाना भी है क्योंकि अपना राज्य स्थापन होना है, करना है तो साथियों को तो साथ लेंगे ना !

❖ निर्विध्न बनाना ही है । आप लोग संकल्प करो क्योंकि राजधानी स्थापन करनी है । आधाकल्प राजधानी चलेगी । राजधानी स्थापन होगी तो यहां से ही संस्कार डालेंगे ना । निर्विध्न तो बनना ही पडेगा । तब तो अपना राज्य स्थापन होगा ।

27-02-14

❖ बापदादा ने देखा मैजोरिटी बच्चों मे अपना राज्य आने की बहुत खुशी है क्योंकि जानते है कि हमारा राज्य आया की आया ।

- हमारा बाबा आ गया। हमारा राज्य आया की आया।
- बापदादा ने देखा कि विशेष सेवामें लगे हुए बच्चे दिन रात खुशी में दिल में गीत गाते है हमारा राज्य आया कि आया। अव उस राज्य में जाने कि तैयारी जानते तो हो। तो आज शिवरात्री पर हर एक अपने दिल में चार्ट को देखना कि अपने राज्य में जाने के लिये अपने में सम्पूर्णता कितनी लायी है ? क्योंकि संम्पूर्ण राज्य में जाना है, जहां दुःख का नाम निशान नहीं।
- क्योंकि आगे चलकर निर्विध्न का अटेन्शन रखना आवश्यक है।
- यह छोटे छोटे व्यर्थ संकल्प है लेकिन कभी भी धोखा समय पर दे सकते है इसलिये व्यर्थ को भी कम करो। क्योंकि व्यर्थ में समय बहुत वेस्ट जाता है। तो आज के दिन शिवजयंती के उपलक्ष्य में व्यर्थ के उपर अटेन्शन देने का होमवर्क बापदादा दे रहा है। रिझल्ट पूछेंगे ना ! एक मास के बाद, तो मैजोरिटी पास हो।
- सेवा के तरफ भी अटेन्शन है और जितना बढा सको सेवा उतनी बढाते जाओं क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिये सेवा को बढाते जाओं क्योंकि अपना राज्य आना है ना। तो अपने राज्य में तो राज्य करेंगे ना। फिर पश्चाताप तो करेंगे कि बाप आया हमको सुनाया भी गया, लेकिन हम नहीं चले।
- दादी रतनमोहिनी जी को डोकटरेट की डिग्री मिली है - यह भी संस्था का शान है, तो ब्रह्माकुमारीझ सब कुछ कर सकती है। नहीं तो सोचते है पता नहीं ब्रह्माकुमारीयां क्या करती है इससे समझते है तो वह ओलराउन्ड सब तरफ पहुंच सकती है।

15-3-14

❖ दिल्ही को यही वरदान है, ड्रामानुसार कि हमारे राज्य में भी दिल्ही विशेष स्थान रहेगा। जहां लक्ष्मी नारायण का राज्य होंगा। कहां भी हो लेकिन दिल्ही तो मुख्य रहेगा तो आना जाना तो होंगा ना। फंकशन मे तो आयेंगे। मिलते रहेंगे। डान्स करते रहेंगे। मजे से राज्य करते रहेंगे। अभी संगमयुग का साथ वहां भी रहेगा। जितने नजदीक अवस्था अनुसार अभी होंगे उतना ही वहां भी परिवार के नजदीक होंगे।

❖ (बाबा अगली सीजन में आयेंगे ना !)
संगमयुग है साथ रहने का, साथ चलने का, साथ राज्य करने का। बाप चाहे साकार में साथ नहीं रहेंगे (शिवबाबा सतयुगी राज्य मे साथ नहीं रहेंगे) लेकिन साथ में आपके राज्य की प्रेरणायें देते रहेंगे।

30-3-14

❖ पुरुषार्थ को तीव्र कर लेना क्योंकि दिनप्रतिदिन माया भी अपना काम करती रहती है।

❖ चारों ओर के जहां जहां भी बच्चे देख रहे हैं, बापदादा भी आप सब को देख कर के यादप्यार दे रहे है और गुडनाईट कर रहे हैं।

खुशी - वाह वाह

25-08-13 (दादीजी)

❖ सभी खुश रहते हो, हाथ उठाओ। कोइ भी बात आये खुशी नहीं

जावे । चलो थोडा सीरियस हो जाना, वह भी ठीक नहीं है ।

- ❖ दुनिया में अभी बुराईयां बढती जा रही है, अैसे टाईम में आप लोगों को खुशी में रहने की कोई न कोई बातें निकालनी चाहिये ।

24-10-13

- ❖ बापदादा को भी खुशी है सदा खुश तो है लेकिन खुशी में खुशी है ।

15-11-13

- ❖ सभी खुशनुमा बच्चों को देख बापदादा बहुत बहुत खुश हो रहे है । वाह मेरे खुशनसीब, खुशनुमा बच्चे वाह । सदा हर बच्चा खुश आबाद रहनेवाली आत्मायें है ।
- ❖ बापदादा एक एक बच्चे की मुस्कराती सुरत को देख खुश है । सदा अैसे ही मुस्कराते खुशी में नाचते बढते चलो, बढाते चलो ।
- ❖ सदा खुश है और सदा खुश रहेंगे । कोई भी बात आये, बात बाप को दे दो और आप मुस्कराते रहो ।

15-12-13

- ❖ सदा खुशनुमा रहनेवाले खुश किस्मत बच्चों को बहुत बहुत बहुत बहुत याद प्यार । सदा खुश रहना और खुब खुशी बांटना ।

31-12-13

- ❖ सभी दिलखुश है ना ! अैसे अभी दिलखुश है, तो यह समय याद करना । जैसे अभी दिलखुश है इस दिलखुश समय को दोहराते

रहो ।

❖ सभी बच्चों को देख बापदादा भी खुश होते है, वाह बच्चे वाह ! सब वाह वाह हो ना ! सदा वाह वाह । बाप सदा वाह वाह लगता है ना तब तो याद करते हो ना । तो बाप वाह वाह तो बच्चे भी वाह वाह । सुबह को उठके याद करना मैं कौनसा बच्चा हूं ? वाह वाह बच्चा हूं । सुबह को उठते ही यह वाह वाह शब्द याद करना । बाप देखे वाह वाह ।

❖ बापदादा विशेष द्रष्टि दे रहे है किस बात के लिये ? वाह वाह रहने के लिये । तो वाह वाह शब्द भूलना नहीं । मैं कौन ? वाह वाह । इझी है ना । हूं ही वाह वाह तो क्या होगा ? खुश । बापदादा वाह वाह तो बच्चे क्या होंगे ? वाह वाह । बस वाह वाह शब्द याद रखना । अब अगर कभी मूड आफ हो ना, तो वाह वाह शब्द याद रखना ।

❖ तो रोज अमृतवेले के बाद देखना बापदादा चक्कर लगायेंगे, देखेंगे सभी को । तो क्या दिखाई देंगे ? वाह वाह ! यह वाह वाह शब्द भूलना नहीं । वाह वाह ।

❖ तो अमृतवेले उठके सदा याद करना, मैं कोन हूं ? वाह वाह बच्चे । कोई भी बात हो ना, वह वाह वाह में समा देना । बात नहीं रखना । बाप और आप बस ।

31-01-14

❖ सभी खुश मिजाज रहते हो, अगर खुश मिजाज नहीं रहते तो जिसमें फेथ हो, भावना हो उससे सहयोग लो ।

❖ बाकी सभी ओ.के. है ? हाथ उठाओं । ओ.के., ओ.के., ओ.के. है ?

14-02-14

- ❖ परमात्मा प्यार अनेक जन्म के दुःख दर्द को समाप्त कर सदा खुशी की खुराक खिलानेवाला है ।
- ❖ तो सभी खुश है ? हाथ उठाओ जो खुश है । जो खुशी कभी नहीं गवांते, सदा खुश ? सदा खुश ? पीछे वाले सदा खुश है ? सदा खुश रहना और सदा खुश बनाना ।

15-03-14

- ❖ बच्चे सदा हर दिन इसी मिलन के खुशी और मौज में आगे बढते चलो ।
- ❖ रुकमणी बहनने दीदी निर्मलशांताजी की याद दी, आज दीदी का पुन्य स्मृति दिवस है - जहां भी है, बच्ची खुश है आप भी खुश रहो ।

30-3-14

- ❖ तीव्र पुरुषार्थ की लहर सदा अपने में लाते हुए औरो को भी तीव्र पुरुषार्थ की लहर मे लाओ । उमंग उत्साह मे लाओ, सहयोगी बनाओ । पुरुषार्थहीन के वायुमण्डल में नहीं आकर उन्हों को भी उमंग उत्साह में लाओ । वायुमण्डल दिनचर्या का अैसे बनाओ जो सभी पुरुषार्थ के उमंग उत्साह से बढते भी चले, बढाते भी चले क्योंकि एक दो के साथी हो ना । उमंग उत्साह अपने अनुभव का सुनाते हुए एक-दो के सहयोगी बनो ।
- ❖ बापदादा खुश होते है जब बच्चों मे उमंग उत्साह की लहर होती है ।

एक बल एक भरोसा

24-10-13

❖ ओ.के., ओ.के., ओ.के. है ? क्या फिकर है ! फिकर आवे तो बाप को दे दो । आप सदा ओ.के. ।

30-11-13 (संदेश)

❖ बाबा बोले, बच्चों का बाप से प्यार और बाप का बच्चों से प्यार यह भी संगमयुग का विशेष भाग्य है । बाप हर बच्चे को देख चाहे लास्ट है, चाहे फस्ट है लेकिन बापदादा हर बच्चें को अैसे देख रहे थे जैसे कोई अपनी चीज होती है तो उसको कितने प्यार से देखते है, हाथ से अैसे प्यार करते है ।

❖ बाबा बोले हर एक बच्चे के दिल का समाचार बाबा जाने, और कोई नहि जान सकते । बाबा जाने एक एक बच्चे के दिल में अभी क्या चल रहा है ।

❖ बाबा ने कहा देखो, बाबा का प्यार नहीं होता तो आप लोगों को कहां से ढुंढा, कोई फोरेन से आया है, कोई इन्डिया के भिन्न भिन्न स्थानों से । सब को बाबा ने ढुंढा ना । तो इतना बाबा का प्यार है जो मेरे बच्चे गुम हो गये थे, उनको ढुंढ कर के अपने पास बुला लिया ।

❖ बाबा छोडता नही है, जैसे बच्चे बाबा को छोडते नही है, वैसे बाबा भी बच्चों के प्यार को छोडते नही है ।

❖ बाबा ने आप एक एक बच्चें को बहुत मीठी द्रष्टि दी और याद-प्यार भी दिया और कहां एक-एक बच्चे को मेरी तरफ से ऐसे (भाकी) कर के याद प्यार देना ।

15-12-13

- ❖ एक एक को बापदादा विशेष प्यार दे रहे है और सदा सर्व के प्यारे देहभान से न्यारे बाप को दिल में समाते हर कदम उठाना ।

31-12-13

- ❖ बापदादा सभी बच्चों के चेहरे में सदा बेफिकर बादशाह की झलक देखने चाहते है ।
- ❖ सभी ने अपने दिलसे जो छोडने चाहते है लेकिन संकल्प में रह जाती है, उसको आज द्रढ संकल्प से बाप को दे सकते हो ? दे सकते हो ?
- ❖ लेकिन आज जो भी जिसमें कमजोरी हो, अगर जरा सा स्वप्न मात्र भी हो तो आज के दिन द्रढ संकल्प से बाप को दे दो । आप हर एक को एक्स्ट्रा मदद मिलेगी ।
- ❖ बापदादा देखते है संकल्प सब करते है लेकिन संकल्प के साथ रोज उस कमजोरी को बाप को देके द्रढ संकल्प करना । इसमें बापदादा आपके मददगार है । उमंग को ढीला नहीं करना, रोज दोहराना । बाप को दे दो कमजोरी, दी हुई चीज कभी वापिस नहीं ली जाती ।
- ❖ मास्टर सर्वशक्तिवान है साधारण नहीं है । तो रोज अमृतवेले दोहराना । बापदादा की मदद लेना ।
- ❖ अभी बापदादा साथ है, जैसे दिल में सदा साथ रखना । दिल का दिलाराम है ना ।
- ❖ मेरा बाबा, जितना बाप में मेरापन लायेंगे, मेरा बाबा, मेरा बाबा उतना सहज याद होती जायेगी क्योंकि मेरी बात कभी भुलती नहीं है । तो बाप को मेरा बनाओं और मेरा भूले नहीं ।

18-01-14

- ब्रह्माबाप की विशेष शिक्षा है - स्मृति स्वरुप बापदादा के बनों । अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं । दोनों को याद करो । दोनों की पालना आगे से आगे बढा रही है ।
- अभी भी ब्रह्माबाप को अव्यक्त रुप में मिलते रहते है तो सभी बापदादा के पालना में चल रहे है ।
- ब्रह्माबाप और शिवबाप, बापदादा का वरदान चला रहा है ।
- बापदादा को हर एक बच्चा दिल में समाया हुआ है । चाहे कहां भी रहते है देश मे या विदेश में । लेकिन दिलाराम के दिल में समाया हुआ है ।

31-01-14

- यह स्नेह, परमात्मा और आत्मा के मिलन का स्नेह अति न्यारा और अति प्यारा है ।
- सबके मन में मेरा बाबा, मेरापन है ।
- सभी को बहुत बहुत बापदादा का सिक व प्रेमसहित याद प्यार स्वीकार हो । ऐसे कोई नहीं सोचे कि हमको तो बाबा का प्यार पता ही नहीं ।
- कुछ भी हो, बाबा मेरा बाबा, यह दवाई है ।

14-02-14

- लेकिन हर बच्चा संगम के समय परमात्म प्यार के पात्र है । यह प्यार की पात्र आत्मायें बाप के अति प्यारे, बाप के लाडले बच्चे है । यह परमात्म प्यार सिर्फ संगमयुग के एक जन्म में ही प्राप्त

होता है ।

- ❖ जैसे बापका सदा हर बच्चे से चाहे पुरुषार्थ मे नंबरवार है फिर भी बाप का प्यार सदा हर बच्चे के साथ है । बापदादा खुश है और हिम्मते बच्चे मददे बाप भी है । अच्छा है, हिम्मत आपकी, मदद बाप की ।
- ❖ आज का दिन प्यार का दिन है, तो प्यार में सब सहज हो जाता है । तो जैसे आप सभी ने हिम्मत रखी वैसे मदद भी बाप करेंगे ।
- ❖ बापदादा को मजा आता है, जब बच्चे हिम्मत रखते है ना तो बापदादा को बहुत खुशी होती है और हिम्मते बच्चे मददे बाप, साथी तो है ही ।
- ❖ दादी जानकी से - (बापदादा को गुलाब के फुलों का हार पहनाया) यह हार आप सबके प्यार का है । निमित्त यह पहना रही है लेकिन आप सबका प्यार बापदादा को पहुंच गया । सभी का प्यार बापदादा को पहुंच रहा है । सभी को आगे तो नहीं ला सकते इसलिये दुर से ही बापदादा वाह बच्चे वाह कह रहे है ।

27-02-14

- ❖ बाप को साथ रखेंगे ना, तो बाप का साथ होने से ओटोमेटिकली व्यर्थ समाप्त हो जायेंगे ।
- ❖ (सभी को कैसे पता पडेगा) पता पड जायेगा । जो रहे हुये है उनको पता पडता जाता है । अभी उमंग उत्साह से रहे हुओ स्थान को पहुंचाओ सभी को । आप कराओ । बाबा करा रहा है, बाप अभी भी कराता रहेंगा ।

15-03-14

- ❖ तो आज हर एक बच्चा होलीएस्ट बनने की मुबारक स्वीकार करे। हर होली बच्चा नंबरवार है लेकिन बापदादा के प्यार का अधिकारी है। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को चाहे देश चाहे विदेश एक एक बच्चे को बहुत दिल व जान, सिक व प्रेम से होली बनने की मुबारक दे रहे है। मुबारक हो, मुबारक हो।
- ❖ हर बच्चा हर सब्जेकट में आगे बढते चलो, बापदादा हर बच्चे के साथी है।
- ❖ आज के दिन से रोज अमृतवेले अपने पुरुषार्थ प्रमाण बाप की दुआयें स्वीकार करना। बाप की दुआयें क्या है ? बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी स्वरुप मे देखने चाहते है।
- ❖ सारा दिन अैसे अनुभव करो कि बापदादा हमारे रक्षक बन साथ मे है और बाप के साथ का अर्थ क्या है ? बाप जो कहे, अमृतवेले जो मुरली सुनते हो उसमे याद प्यार के साथ दुआयें है ही। तो रोज दुआयें लेते उडते चलो और उडाते चलो। बापदादा का वरदान सफलता मेरा जन्मसिध्ध अधिकार है, यह सदा स्मृति मे रखना। (बाबा अगली सीजन मे आयेंगे ना !)
- ❖ संगमयुग है साथ रहने का, साथ चलने का, साथ राज्य करने का। बाप चाहे साकार मे साथ नहीं रहेंगे (शिवबाबा सतयुगी राज्य मे साथ नहीं रहेंगे) लेकिन साथ मे आपके राज्य की प्रेरणायें देते रहेंगे।

30-03-14

- ❖ बापदादा को हर बच्चे के प्रति दिल मे प्यार है। हर एक के दिल मे बाप की याद प्यार समाई हुई है, यह अलौकिक प्यार हर एक को

चला रहा है । चाहे कहां भी कितने भी बच्चे है लेकिन बापदादा के दिल का प्यार बच्चों को चला रहा है । हर एक बच्चा बापदादा के प्यार मे, परिवार के प्यार मे नंबरवार चल रहा है । यह अलौकिक प्यार सारे कल्प मे अब संगमयुग मे ही अनुभव करते हो । बापदादा भी हर बच्चे के दिल का प्यार देखकर हर एक बच्चे के प्रति दिल की दुआयें देते है, बच्चे सदा दिल के दिलवर द्वारा दिल का प्यार लेते हुए आगे बढते चलो ।

❖ अभी बापदादा हर एक बच्चे को महावीर बन चलने की दुआयें दे रह है । कभी भी थकना नहीं, गभराना नहीं, बाप को हर बच्चा अति प्यारा है । यह प्यार ही आगे बढा रहा है और आगे बढाता रहेगा । देखो सारे विश्व मे बापदादा के संबंध का प्रेक्टिकल मे अनुभव करनेवाले कितने और कौन है ! तो आप सभी प्रत्यक्ष प्रमाण हो, दिल से प्यार है और प्यार की पालना से आगे से आगे बढ रहे है ।

❖ तो हिम्मते बच्चे मददे खुदा । जरुर मदद मिलेगी । सिर्फ इच्छा रखो बस बनना ही है, करना ही है, पुरुषार्थहीन नहीं, पुरुषार्थ । बहादुर बनो, बहादुर बनाओ ।

❖ बापदादा को खुशी होती है कि हिम्मत तो है, हिम्मते बच्चे मददे बाप तो है ही । हिम्मत नहीं हारना । बापदादा का सहयोग पहले है । हिम्मत हारा तो सब गया । हिम्मत है तो हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही ।

❖ हिम्मते बच्चे मददे बाप है । अच्छा है । हम्मेशा हिम्मत हर कार्य मे रखना चाहिये । हम नहीं करेंगे तो कौन करेंगा ! हम ही तो है, अैसे है ना ।

संगठन-निर्विध्न

25-08-13 (दादीजी)

❖ सभी संतुष्ट रहना और सबको संतुष्ट करना । दादी जानकी जी ने कहां कि दादीने जैसे सबको एकता के सुत्र में बांधा, इतने बडे संगठन को एकमत बनाया और सबको स्नेह की पालना दी, अब हम सबको उसका रिटर्न करना है ।

❖ लेकिन करे क्या, संगठन को कैसे मजबुत बनाये । कोई है जो खुद के लिये सोचते रहते है लेकिन संगठन को, क्लास को एक उमंग मे उठावे वह कम है ।

❖ जानकी दादी कहती है, एडीशन करती है । एकता होनी चाहिये । एक ने कहां दुसरे ने किया, इसको कहते है एकता । जहां एकता है, एक की याद है वहां सफलता हुई पडी है । तो क्या करेंगे ? दादीने कहां मनसा सेवा और दादी जानकी कहती है एकता के उपर अटेन्शन दो ।

❖ एक ने कहां दुसरे ने मांना । एक दो के विचारों को समज के एक दो को साथ देना ।

24-10-13

❖ विदेश वाले आपस मे मिलने का, आपस में रुह रिहान करने का वा सेवा के प्लेन बनाने का, बापदादा सब देखते है कैसे बच्चे आपस मे संगठन बनाके सेवा को आगे बढा रहे है ।

❖ यु.के., युरोप, मिडल इस्ट - अच्छा है संगठन बढता जा रहा है इसकी बधाई है ।

❖ ओस्ट्रेलिया, ऐशिया - अच्छा संगठन है । वाह बच्चे वाह ।

❖ अमेरिका - केरेबियन सहीत - बहुत अच्छा संगठन में मिल के आये है ।

❖ आफ्रिका, मोरेशियस - सदा आगे बढते और बढाते रहना । कोई भी अगर थोडा भी कमजोर होता है तो उनको अपने सहयोग द्वारा चाहे स्वयं चाहे बडों से सहयोग दिलाते रहना । परोपकारी बन स्व उपकार और पर उपकार दोनों का अटेन्शन रखना ।

28-11-13 (संदेश)

❖ विशेष कर ईश्वरीय परिवार में स्नेह की शक्ति को बढाने के लिये खास योग का प्रयोग आवश्यक है । इश्वरीय सेवामें भी हर वर्ग तथा हर उम्र के भाई-बहनों के अनुसार भिन्न-भिन्न कार्यक्रम जैसे (1) आपसी ज़ान गोष्टि (2) योग के प्रयोग की भट्टीयां (3) इश्वरीय अलौकिक जीवन पर विशेष गीत, संगीत तथा ड्रामा आदि के कार्यक्रम और (4) स्नेहमिलन के कार्यक्रम रखने से ब्राह्मण परिवार में आपसी स्नेह और समरसता का वातावरण बढेगा, जिसके प्रकंपन स्वतः ही अन्य इच्छुक आत्माओं को सेवाकेन्द्रो पर आकर्षित करेंगे ।

04-12-13

❖ मेरा हर बच्चा निर्विध्न अवस्था मे आगे बढते अनुभवी बन गया है । अनुभव के आधार से और बाबा की चाहना से औरो को भी निर्विध्न बनाओं ।

❖ दादी जानकी के लिये बाबाने कहां दादी के मन में सदा यही रहता है कि बाबा का यज्ञ निर्विध्न हो, मालामाल हो । यज्ञ से दादी

जानकी का बहोत-बहोत प्यार है । मन मे भी यहीं संकल्प रहता तो स्वप्न भी यही देखती है कि बाबा जो चाहता है वह सभी करके दिखाये । जानकी दादी चाहती है बाबा का यज्ञ सदा सेफ रहे, तन से मन से और धन से भी ।

14-02-14

- ❖ अब बाबा यहीं चाहते है कि हर एक अपने को लक्ष्य रख करके निर्विध्न, मनसा, चाहे वाचा, चाहे संबंध-संपर्क में निर्विध्न सदा बाप समान बन औरो को भी उमंग-उत्साह में लाकर उनके सहयोगी बन उन्हों को भी निर्विध्न बनावे ।
- ❖ हर एक अपने सेवा स्थान को निर्विध्न बनाकर सभी की दुआयें ले। हर एक सेवाकेन्द्र या हर एक जहां भी है, घर में है, चाहे सेन्टर पर है, यह द्रढ संकल्प करे और करके दिखावे कि मै निर्विध्न हूं और साथियों को भी निर्विध्न बनाने की सेवा करुंगा । कम से कम हर सेन्टर को अपने अपने साथियों के सहयोगी बन निर्विध्न बनाने की सेवा में सफल बने । बापदादा अभी चाहे सेवाकेन्द्र, चाहे स्वयं कहां भी रहते है, स्वयं को निर्विध्न, संकल्प मात्र भी व्यर्थ समाप्त । अैसे बने और बनाये ।
- ❖ तो आज से स्वयं को निर्विध्न और जहां भी रहते है उस स्थान को, साथियों को निर्विध्न बनायेंगे - यह द्रढ संकल्प करते हो अभी से ? साथियों को भी बना सकते हो ? जब आप विश्व परिवर्तक अपने को कहलाते हो तो विश्व के परिवर्तन के पहले जहां भी है उस स्थान को तो निर्विध्न बनायेंगे । तो संकल्प करो, साथियों की भी, जहां तक हो सकती है, मदद लो । मदद ले के भी बनाना है । चाहे कैसा

भी है लेकिन आपका वायुमण्डल इतना पावरफुल हो जो अपने वायुमण्डल को जहां तक आपका वायुमण्डल है, वहां तक हर एक निर्विध्न हो । भले नंबरवार बनेंगे, यह तो बाप भी जानते है लेकिन फर्क तो दिखाइ देंगा ना ! तो आज से विशेष संकल्प उत्पन्न करो कि अपने कनेक्शन में, नजदीक वाले उन्हों को भी निर्विध्न बनाना है ।

❖ तो बापदादा टाईम देते है, अपने कनेक्शन में आने वालो को आप समान साथी बनाओ । चारो ओर ब्राह्मण सदा निर्विध्न । यह हो सकता है कि मुश्किल है ? यह पहली लाईन हो सकती है ? तो अगली सीजन तक टाईम देवे कि अभी ? नंबरवार होंगे लेकिन इतना तो बनाओ जो कोई विध्नरुप नहीं बने । यह हो सकता है ? विध्नरुप नहीं बने ? पहली लाइन । हो सकता है ? आगे वाले ? तो अगली सीजन मे आयेंगे तो यह खुशखबरी सुनेंगे । यह लायेंगे, जो समजते है हम पुरुषार्थ करके थोडी महेनत भी करनी पडेगी लेकिन साथीयों को, आसपास वाले को निर्विध्न बनायेंगे । अभी बापदादा हर मास रिजल्ट देखेंगे । बापदादा आपको ऐसे सहयोगी बनाने वालों को अभी भी मुबारक दे रहे है, और जब फिर आयेंगे तो यह रिजल्ट देखेंगे की हो गया । हो सकता है ? पहली लाईन नहीं उठाती । क्योंकि सभी निमित्त हो ना तो निमित्त को तो ध्यान देना पडेगा । अच्छा है, हिम्मत आपकी, मदद बापकी ।

❖ तो अभी करके बाप को दिखायेंगेना ! बापदादा देखेंगे । बापदादा जो प्रैक्टिकल साथियों को ऐसे निर्विध्न बनायेंगे उनको बापदादा प्रेजन्ट देंगे । हिम्मत वालों को बापदादा की मदद है और मिलती रहेंगी । परिवर्तन तो होना है ना । जो भी छोटी मोटी बात है ना, वह

परिवर्तन आपे ही कर लो । कहना नहीं पडे । समजदार तो हो क्या करना है, क्या नहीं करना है । तो जो नहीं करना है वह नहीं कर लो, बस ।

❖ बापदादा अभी विश्व परिवर्तक बनने के लिये हर एक को निर्विध्न बनना और साथियों को बनाना, यह चाहते है क्योंकि विश्व परिवर्तक हो, तो एक-दो साथियों को बदलना क्या मुश्किल है ! तो हर एक ध्यान रखना हमको अपना वायुमण्डल और साथियों को निर्विध्न बनाना ही है । विश्व को बनाने वाले हो, बापदादा तो छोटा सा काम दे रहे है । अभी दुसरी बारी आये तो खुश खबरी सुनेंगे ना । अपने नजदीक वाले साथियों को निर्विध्न बनाओं, छोटा सा काम देते है, सभी को नहीं कहते है ।

❖ (हर एक स्थान की जोन-सब जोन ईन्चार्ज बडी बहनें उठे) अभी लक्ष्य रखो कि जो भी एरिया आपको मिली है सेवा के लिये उनको निर्विध्न बनाना ही है । आप लोग संकल्प करो क्योंकि राजधानी स्थापन करनी है । आधाकल्प राजधानी चलेंगी । तो इसके लिये थोडा चक्कर लगाके महेनत करो जो हेड है वह सभी जगह रहके समस्याओं को हल करो । होती तो समस्यायें एक जैसी है लेकिन हर एक अपने एरिया में समस्या समाप्त करके सफलतामूर्त बने । ठीक है ना । तो अगले बार जब आयेंगे तो पूछेंगे आपके एरिया से विध्न समाप्त हुए ? पूछे ? क्युंकि बनना तो आप लोगों को ही है, जो भी बैठे है उन्हों को ही है, बन के बनाना है । राजधानी स्थापन होंगी तो यहां से ही संस्कार डालेंगे ना । होगा । कोई बात नहीं है, बापदादा भी मददगार बनेंगे । कोई भी अैसी प्रोबलेम हो तो यज्ञ मे लिख कर भेजो, ठीक होगा, जैसे मदद हो

सकेगी, होगी। निर्विध्न तो बनना ही पडेगा। तब तो अपना राज्य स्थापन होगा। बहुत अच्छा।

27-02-14

❖ तो अभी से अपनी दिल मे सदा निर्विध्न रहने का संस्कार देखते हो ? विध्न आने के पहले ही निर्विध्न अवस्था की अनुभुति होती है ? अभी बापदादा बच्चो में विध्न विनाशक की विशेषता देख भी रहे है और देखने चाहते भी है। बाप का निर्विध्न साथी बनकर चलने का पक्का संस्कार कोई कोई बच्चों का है। अभी आप निमित्त बने हुये बच्चे निर्विध्न अवस्था के अनुभवी बनेंगे तभी आप के निर्विध्नता का वायब्रेशन पुरुषार्थी बच्चों को पहुंचेगा।

❖ तो आज बापदादा देख रहे थे निर्विध्न स्थिति कितना समय रहती है।

30-3-14

❖ किसी भी वायुमण्डल को देख उसके प्रभाव में न आकर बाप के स्नेह और सहयोग से काफी आगे बढते रहो हो और बढते रहना।

❖ एक दो को देख उनकी विशेषता को देखो, दुसरी बातों को नहीं देखो। एक दो की कमजोरी की बातें सुनते भी जैसे नहीं सुनो। खुद को भी आगे बढाओ और साथियों को भी आगे बढाते चलो।

❖ तीव्र पुरुषार्थ की लहर सदा अपने में लाते हुए औरो को भी तीव्र पुरुषार्थी की लहर में लाओ। उमंग-उत्साह में लाओं, सहयोगी बनो। पुरुषार्थहीन के वायुमण्डल में नहीं आकर उन्हों को भी उमंग-उत्साह मे लाओ। पुरुषार्थ मे ढीले साथी होने के कारण

थोडा थोडा असर पड जाता है । वह अटेन्शन दो । अब हर एक बच्चा किस लक्ष्य में है ! तीव्र पुरुषार्थी । ढीला पुरुषार्थी नहीं । ठीक हो जायेगा, ठीक हो जायेगा, यह नहीं सोचो । ठीक होना ही है क्योंकि बाप से प्यार है ना । बाप से प्यार है तो बाप को किससे प्यार है ? तीव्र पुरुषार्थी बच्चों से । तो तीव्र पुरुषार्थी बन औरो को भी सहयोगी बनो । बहादुर बनो, बहादुर बनाओ ।

अमृतवेला

25-08-13 (दादीजी)

❖ हम सभी पहले अमृतवेले मैजोरिटी बाबा के पास मिलने जाते है ।

❖ दादी कहती है, मेरा जन्म तो हो गया लेकिन रोज अमृतवेले हम सर्विसेबल ग्रुप बाबा के पास जाते है । 4 बजे रोज जाते है, मुख्य जो भी निमित्त है वह सब वहां इकट्ठे होते है और बाबा कोई न कोई कार्य हम लोगो को देता है । अभी यह करो, अभी यह करो, और हम सब मिलकर आपस में इकट्ठे होकर के प्लेन बनाते है और फिर बाबा को रिझल्ट सुनाते है ।

31-12-13

❖ सभी ने अपने दिलसे जो छोडने चाहते है उसको आज द्रढ संकल्प से बाप को दे दो । उसके लिये बापदादा विशेष अमृतवेले विशेष मदद देंगे ।

❖ सुबह अमृतवेले, अमृतवेला करने के बाद संकल्प को चेक करना और दिलसे द्रढ संकल्प करना तो बापदादा की एकस्ट्रा मदद

मिलेगी ।

❖ सबेरे उठके अपने दिल से पुरुषार्थ करेंगे तो मदद भी मिल जायेगी । द्रढ संकल्प करो कल सुबह को, द्रढता संम्पन्न छोडने का संकल्प करना ।

❖ छोडना है अपने दिल में सोचो लेकिन रोज अमृतवेले के बाद उसको चेक करो तो जो संकल्प किया वह द्रढ है ? क्योंकि इसमें अलबेलापन भी आता है । तो आज के दिन कोई न कोई श्रेष्ठ धारणा अपने दिल में करो और रोज अमृतवेले उसको दोहराओं ।

❖ सभी आज कोई न कोई स्व उन्नति अपने हिसाब से चेक कर संकल्प में रखो और रोज उसको अमृतवेले दोहराना ।

❖ कल के दिन कोई न कोई द्रढ संकल्प सामने लाना और रोज अमृतवेले दोहराना । चेक करना । बापदादा की मदद लेना ।

❖ तो बापदादा यहीं चाहते है, सुबह को उठके अपनी शकल देखना, मन की शकल, यह शकल नहीं । मन की शकल देखना, बाप के दिल पसंद है ।

❖ तो बाप वाह वाह तो बच्चे भी वाह वाह। सुबह को उठके याद करना मैं कौनसा बच्चा हूं ? वाह वाह बच्चा हूं ।

❖ सुबह को उठते ही यह वाह वाह शब्द याद करना । बाप देखे वाह वाह । तो कल से रोज अमृतवेले अपना चेहरा देखना, अंदर का चेहरा, बाहर का नहीं चेक करना वाह वाह है ?

❖ बापदादा सारे परिवार को अमृतवेले चक्कर लगाके द्रष्टि देते है । बापदादा को चक्कर लगाने में कितना टाईम चाहिये ? क्योकि बच्चों से प्यार है ना तो रोज अमृतवेले के बाद देखना बापदादा चक्कर लगायेगा, देखेंगे सभी को । तो क्या दिखाई देंगे ? वाह वाह । यह

वाह वाह शब्द भुलना नहीं ।

❖ तो अमृतवेले उठके सदा याद करना मैं कौन ? वाह वाह बच्चे ।

❖ बापदादा दिल में रोज अमृतवेले उन सिकीलधे बच्चों को, जो फोलो करनेवाले है उन्हों को विशेष याद-प्यार देते है । वाह बच्चे वाह का वरदान देते है ।

❖ आज अमृतवेले अव्यक्त ब्रह्माबाप ने विशेष दिलसे अति स्नेहरुप से एक एक बच्चे को बहुत स्नेह से इमर्ज कर, साकार मे इमर्ज कर बहुत याद-प्यार दिया है ।

❖ हर बच्चे को अमृतवेले बापदादा विशेष चारों ओर याद-प्यार और शक्तियां वरदान में देते है । अैसे प्रभु पात्र बच्चो का भाग्य है ।

❖ बच्चे तो अमृतवेले से ले के बाप को मुबारक हो, मुबारक हो की लाइन्स लगा देते है । और बापदादा बच्चों को मुबारक का रेस्पोन्स बहुत-बहुत स्नेह से देते है ।

❖ आज अमृतवेले चारों ओर से होली मुबारक, होली मुबारक के बच्चों के दिल के गीत बाप ने सुने है । बाप भी अभी सन्मुख आप एक एक बच्चे को कितने भी है, एकदम लास्ट बच्चे को भी मुबारक दे रहे है ।

❖ आज बापदादानें चारो ओर के बच्चों को अमृतवेले से लेके दिल से मुबारक दी । हर बच्चा हर सब्जेक्ट में आगे बढते चलो, बापदादा हर बच्चे के साथी है ।

❖ आज के दिन से रोज अमृतवेले अपने पुरुषार्थ प्रमाण बाप की दुआयें स्वीकार करना ।

❖ अमृतवेले जो मुरली सुनते हो उसमे याद-प्यार के साथ दुआयें है ही ।

- ❖ जो भी कुछ किया उसको आज बीती सो बीती कर आगे के लिये सफलता मेरे जन्मसिध्ध अधिकार है, अमृतवेला रोज इस वरदान को स्मृति में रख सारा दिन चेक करना और सफलता स्वरुप बनना ।
- ❖ तो रोज अमृतवेले चेक करो कि मेरे पुरुषार्थ की गती तीव्र है या चल रहे है, पहुंच जायेंगे, हो ही जायेगा, अैसे संकल्प तो नहीं रखते ! तीव्र पुरुषार्थी बनो ।

व्यर्थ संकल्प - ड्रामा

25-08-13 (दादीजी)

- ❖ आप लोगों की खुद की मन्सा भले विपरीत नहीं है, लेकिन फालतू है । फालतू टाईम, फालतू संकल्प, फालतू बोल यह चलता है, वह फालतू अभी खतम होना चाहिये ? आपका पहले खतम होगा तो वायब्रेशन फैलेगा ।
- ❖ अभी मन के व्यर्थ संकल्प जो है, उसको खतम करने का अटेन्शन चाहिये ।
- ❖ कभी कभी जब हो जाते है ना तो कहते है कुछ सोच रहा हुं ! लेकिन क्या सोच रहे है । जो बातें हुई उनको ही सोच रहे हो या बातों का हल सोच रहे है ? कई बातों को ही सोचते रहते है, यह हुआ यह हुआ ।
- ❖ व्यर्थ संकल्प अभी बहुत बढ गये है । मन बिजी हो, नहीं तो व्यर्थ बहुत चलता है ।

24-10-13

- ❖ साथ साथ मन की स्थिति मे नंबरवार है । अभी बापदादा यहीं चाहते है वह स्थिति और सेवा की स्थिति दोनों मे तीव्र हो । बापदादा यही चाहते है कि हर बच्चा सदा अचल अडोल आगे से आगे बढता जाये ।
- ❖ ओ.के., ओ.के. सदा ओ.के. । क्या फिकर है ! फिकर आवे तो बाप को दे दो । आप सदा ओ.के. ।

28-11-13 (संदेश)

- ❖ बीती को बीती कर संगमयुग के हर नये पल में नवीनता के अनुभव करने - कराने का प्रयोग हर एक के दिलमे नया उमंग पैदा करेगा ।

30-11-13 (संदेश)

- ❖ बाबा बोले, देखो ड्रामा मे यह भी नुंधा हुआ था लेकिन हर एक बच्चे के दिल का समाचार बाबा जाने ।
- ❖ बाबा कहता ड्रामा में जो हो रहा है, उस सब मे कल्याण है ।

04-12-13

- ❖ मेरा हर बच्चा निर्विध्न अवस्था मे आगे बढते अनुभवी बन गया है । अनुभव के आधार से और बाबा की चाहना से औरो को भी निर्विध्न बनाओ ।
- ❖ बाबा की चाहना है कि अभी बच्चे अपनी एकरस अवस्था बनाये ।

31-12-13

- ❖ कुछ भी बात हो जाये, आई और गई आप क्यों उसको पकड लेते हो ? कोई बात ठहरती नहीं है, चली जाती है । आप क्यों पकड लेते हो ?
- ❖ कोई भी बात हो ना, वह वाह वाह में समा देना । बात नहीं रखना ।

31-1-14

- ❖ जहां समर्थ है वहां व्यर्थ स्वतः ही समाप्त हो जाता है ।
- ❖ पुरुषार्थ में थकना नहीं, कोई भी छोटी-मोटी बात आती है, मदद लो । नहीं तो किससे मदद नहीं लेनी है तो योगबल से चेक करके उसका कोई न कोई सहयोग ढुंढो ।
- ❖ अगर कोई विघ्न है या हलचल है तो अपने दादीयों को या जिसमें भी आपका फेथ हो, बडी दादी या दादीयों मे उनको सुना देना, रखना नहीं । अंदर कोई न कोई इलाज ले लेना ।
- ❖ जयंतिबहनने कहां - बाबा दादी जानकी को आपने 8 दिन के लिये लंडन भेजा, उसके लिये बहुत बहुत थेंक्स । बाबा बोले - सब खुश हो गये न । ठिक है, जो ड्रामा में था वह अच्छा हुआ ।

14-2-14

- ❖ बापदादा अभी चाहे सेवाकेन्द्र, चाहे स्वयं कहां भी रहते है, स्वयं को निर्विध्न, संकल्प मात्र भी व्यर्थ समाप्त । चारों ओर ब्राह्मण सदा निर्विध्न ।

27-2-14

❖ बाप का निर्विध्न साथी बनकर चलने का पक्का संस्कार कोई कोई बच्चों का है ।

❖ यादगार है शिव अवतरण का, तो आज के दिन अैसे निर्विध्न रहने का लक्ष्य रखनेवाले को बापदादा अवतरण के दिन की मुबारक भी देते है और दिलाराम दिल का प्यार भी दे रहे है ।

❖ तो आज के अवतरण दिवस पर बाप यही चाहते है कि हर बच्चा अभी अपने पुरुषार्थ अनुसार अपने पास नोट करे जो भी समय अपने अनुसार आप फिक्स करो, उतना समय निर्विध्न रहे ?

❖ इसलिये बापदादा चाहते है सारे विश्व के चारो ओर के बच्चे अब अपने हिम्मत के प्रमाण फिक्स करे कि इतना समय में आत्मा निर्विध्न रह सकती हुं । और अटेन्शन से रह के देखे । तो बापदादा एक मास की रिजल्ट देखने चाहते है, सिर्फ एक मास, ज्यादा नहीं बताते है । तो एक मास संकल्प में भी निर्विध्न, व्यर्थ संकल्प भी नहीं, स्टोप कहा स्टोप । अभी संकल्प के उपर अटेन्शन की आवश्यकता है । तो चेक करना हर एक संकल्प मे भी निर्विध्न रहे ? व्यर्थ संकल्प भी नहीं । क्या अपने संकल्प शक्ति पर इतना अटेन्शन है ? संकल्प अपनी शक्ति है ना ! तो निर्विध्न रहने का प्लेन सोचो, एक मास के लिये चेक करो जो सोचा वह हुआ ? क्योंकि माया भी सुन रही है । कितनी भी वातावरण की माया हो, लेकिन वातावरण का प्रभाव मन के शुभ संकल्प मे विध्नरुप नहीं बने, इसमे सफलता हो, तो १प दिन के अंदर चेक करना व्यर्थ संकल्प भी नहीं, सदा दिल मे बाप समाया हुआ है ? अभी कुछ समय इस बात पर संकल्प के पुरुषार्थ पर अटेन्शन देना । वाणी और कर्म तो मोटी चीज है

लेकिन संकल्प भी व्यर्थ न हो क्योंकि एक-एक संकल्प की चेकिंग आवश्यक है । भले वाचा और कर्मणा भी है लेकिन मनसा शक्ति पावरफुल होने से वाचा और कर्मणा में फर्क पड जायेगा । तो बापदादा आज मन्सा संकल्प के तरफ अटेन्शन खिंचवा रहे है, जो निमित्त महारथी है अब मन्सा शक्ति के उपर अटेन्शन दो । तो बापदादा आज मन्सा संकल्प के लिये ईशारा दे रहे है । क्योंकि वेस्ट थोट्स जो आवश्यक नही है वह भी टाईम ले लेते है । वह समय बचाना है । और टाईम को तीव्र पुरुषार्थ मे लगाना है । तो आज बापदादा व्यर्थ के उपर अटेन्शन खींच रहे है क्योंकि बच्चे कहते है खराब संकल्प तो नहीं है ना । यह छोटे छोटे व्यर्थ संकल्प है लेकिन कभी भी धोखा समय पर दे सकते है । इसलिये व्यर्थ को भी कम करो ।

❖ क्योंकि इस शिवरात्रि पर बाप को कोई सौगात तो देंगे ना ! देंगे ? तो बापदादा यहीं सौगात चाहते है कि व्यर्थ को समाप्त करो । अटेन्शन दो । बुराई के उपर अटेन्शन है लेकिन व्यर्थ के उपर भी अटेन्शन देना है क्योंकि व्यर्थ में समय बहुत वेस्ट जाता है । तो आज के दिन शिवजयंति के उपलक्ष्य मे व्यर्थ के उपर अटेन्शन देने का होमवर्क बापदादा दे रहे है ।

15-3-14

❖ होली, जो सेकण्ड बीता वह सेकण्ड के लिये क्या कहेंगे ? होली, हो लीया ।

❖ कोई भी बातें आये, बातों का काम है आना लेकिन आप बच्चों का काम है बाप के दिल की दुआयें लेना ।

- ❖ तो होली मनाना अर्थात बीती को और वर्तमान को सदा सफलता स्वरुप बनाना है ।
- ❖ तो आज होली अर्थात बीती सो बीती । होली अर्थात बीती । तो जो भी कुछ किया उसको आज बीती सो बीती कर आगे के लिये सफलता मेरा जन्म सिध्ध अधिकार है । प्रैक्टिकल मे अगर कोइ बात आवे तो सफलता के वरदान को याद करना और प्रैक्टिकल में लाना ।
- ❖ तो जहां सफलता अधिकार है वहां माया की क्या बडी बात है ! माया के खेल देखते रहो, माया का काम है आना आप का काम क्या है ? विजय प्राप्त करना । यह सदा याद रहे सफलता के विजयी रतन हुं ।

30-3-14

- ❖ बापदादाने देखा आगे बढने का संकल्प काफी बच्चो में है, चाहे कितनी भी छोटी मोटी रुकावटे आये लेकिन बापदादाने देखा मैजोरिटी बच्चे बाप के प्यार और नोलेज के आधार से अच्छे आगे बढ रहे है और बढते रहेंगे । दुसरो की बातों को नहीं देखो, विशेषता को देखो ।
- ❖ वायुमण्डल क्या भी बने लेकिन आप अपने वायुमण्डल से वायुमण्डल को परिवर्तन करो । वायुमण्डल मे आओ नहीं, आगे बढो । कोई कोई बच्चा अभी भी देखते है पुरुषार्थ मे बातें आते थोडा कमजोर बन जाते है लेकिन नहीं, बहादुर बनो, बहादुर बनाओं ।
- ❖ दिनप्रतिदिन माया भी अपना काम करती रहती है । लेकिन आप सब बच्चे कौन हो ? आप का टाइटल क्या है ? मायाजीत ।

ओम शान्ति

नोट

नोट

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414007497, +919414150607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com